मांगत हों मेरे दुलहा

मांगत हों मेरे दुलहा, मन कर करम वचन।
ए जिन तुम खाली करो, मैं अर्ज करूं दुलहिन।।

मेरे धनी तुमारी साहेबी, तुम अपनी राखो आप।
इस्क दीजे मोहे अपनों, मैं तासों करूं मिलाप।।

ना चाहों मैं बुजरकी, ना चाहों खिताब खुदाए।
इस्क दीजे मोहे अपना, मोहे याहीसों मुद्दाए।।

इलम चातुरी खूबी अंग की, मोहे एही पट लिख्या अंकूर।
एही न देवे देखने, मेरे दुलहे के मुख का नूर।।

प्रेम दरद इस्क तुमारा, मैं फेर फेर मांगूं फेर।
प्यारें मिलूं प्यारे पिउसों, प्यारी महामत कहे बेर बेर।।